

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे। क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे। धरणिधरणिकणचक्रगरिष्ठे। केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे॥	प्रलयपयोधिजले धृतवानिस वेदम्। विहितवहित्रचरित्रमखेदम्। केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे॥ इशावतार / जयदेव कृत दशावतार स्तोत्र
तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गम्। दिलत हिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम्। केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे॥	वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना। शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना। केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे॥
क्षित्रयरुधिरमये जगदपगतपापम्। स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्। केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे॥ इशावतार / जयदेव कृत दशावतार स्तोत्र 6	छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन। पदनखनीरजनितजनपावन। केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे॥
वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम्। हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम्। केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे॥	वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम्। दशमुखमौलिबलिं रमणीयम्। केशव धृतरामशरीर जय जगदीश हरे॥
म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्। धूमकेतुमिव किमपि करालम्। केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे॥	निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम्। सदयहृदयदर्शितपशुघातम्। केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे॥ इशावतार / जयदेव कृत दशावतार स्तोत्र